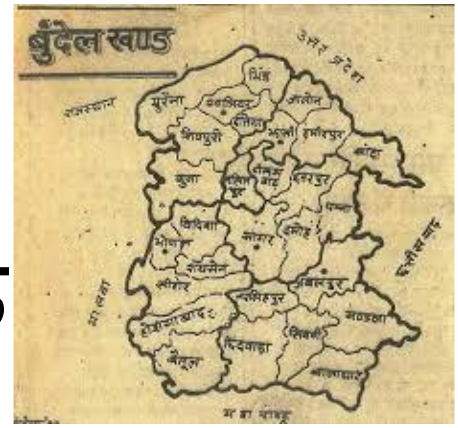
अरविन्द कुमार त्रिपाठी
द्वारा
पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन





भौमिकीय संरचना, तालाब, नहर, नाला
Geological Structure & Ponds, Canal, Nala(Water Channel)

Puratan BANDA, Bundelkhand ka Sankshipt Varnan

Arvind Kumar Tripathi

ISBN : 978-93-5906-820-6

भौमिकीय संरचना, तालाब, नहर, नाला **Geological Structure & Ponds, Canal, Nala(Water Channel)**

भौमिकीय संरचना, तालाब, नहर, नाला **Geological Structure & Ponds, Canal, Nala(Water Channel)**

अध्याय शीर्षक	भौमिकीय संरचना, तालाब, नहर, नाला
सर्वाधिकार	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
आइ एस बी एन / **ISBN**	978-93-5906-820-6
प्रकाशक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक ग्राम – अछरौन्ड, बान्दा – 210 001 उत्तर प्रदेश
मूल्य	निःशुल्क, पुस्तक मित्र को देना
सन्स्करण	प्रथम, 01 अप्रैल 2020
आवरण / मुखपृष्ठ	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
शब्द – संयोजन	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
मुद्रक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
सन्दर्भ / साभार / सौजन्य	अध्याय **Reference** देखे

Chapter Heading	**Geological Structure & Ponds, Canal, Nala(Water Channel)**
Copyright @	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
ISBN	**978-93-5906-820-6**
Publisher	**Arvind Kumar Tripathi Village - Achharaund Banda - 210 001 Uttar Pradesh**
Price	**Free, Circulate to Friends**
Edition	**First, 01 April 2020**
Cover Main	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Word Compositor	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Printer	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Reference/ Gratitude/ courtesy	**Peruse Chapter - REFERENCE**

भौमिकीय संरचना, तालाब, नहर, नाला **Geological Structure & Ponds, Canal, Nala(Water Channel)**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

भौमिकीय संरचना, तालाब, नहर, नाला **Geological Structure & Ponds, Canal, Nala(Water Channel)**

पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड – भौमिकीय संरचना, तालाब नहर नाला का संक्षिप्त वर्णन

भौमिकीय संरचना, तालाब, नहर, नाला **Geological Structure & Ponds, Canal, Nala(Water Channel)**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

तालाब नहर नाला

बान्दा जिले के तालाब(**Ponds of Banda**)

ऐसी मान्यता है कि प्राचीन काल में इस क्षेत्र में वामदेव ऋषि रहा करते थे, जिनके नाम पर इसको बान्दा कहा जाने लगा था। इस जिले की भूमि भी पहाड़ी, पठारी, ऊँची–नीची, खन्दकी है। खन्दकी, खन्दकों जैसी भूमि होने से वर्षा ऋतु में समूचे खन्दक छोटे–छोटे तालाबों में तब्दील हो जाते हैं, भूमि दलदली हो जाती है।

1

बाघेन नदी जिले को दो भागों–उत्तरी–पूर्वी एवम् दक्षिणी–पश्चिमी में विभाजित करती है। जिले की नीची भूमि मार, पड्डुआ एवम् काली काबर है। लेकिन जो ऊँची भूमि वाला क्षेत्र है, उसे पाठा क्षेत्र कहा जाता है। पाठा क्षेत्र में पानी का भयन्कर अभाव है, भूमि रेतीली–सी, अनुपजाऊ है। नदियों की कछारों और पहाड़ों की पठारों की भूमि गीली एवम् दलदली रहती है, जिसमें धान की खेती अधिक होती है। बान्दा में विभिन्न प्रकार का धान(चावल) पैदा किया जाता है जो जिले से बाहर दूर–दूर तक निर्यात किया जाता है।

पाठा क्षेत्र(**Upland Area**)

पाठा(पठारी) क्षेत्र कर्वी एवम् मऊ तहसीलों के मध्य का भूभाग है। यह टौरिआऊ, पथरीला, पठारी, ऊँचा, पहाड़ी एवम् जन्गाली क्षेत्र है। भूमि रॉंकड़ है। जहॉं कहीं थोड़ी–सी काबिल काश्त भूमि है वहॉं कोल, भील, कौंदर एवम् सहरिया(वनवासी) आदिवासी जातियों की झोपड़ियों वाली बस्तियॉं हैं। यह बान्दा जिले का आदिवासी बहुल क्षेत्र है। वर्षा ऋतु(खरीफ) के मौसम में इस पाठा क्षेत्र में कोदों पैदा हो जाता है।

इस क्षेत्र में विन्ध्य की पहाड़ियाँ फैली हुई हैं। पहाड़ी, पथरीला उन्चा उठा भूभाग होने से ही इसे 'पाठा' कहा गया है। पठार के मध्य दूर–दूर भरके नुमा तालाब भी हैं। जिनका ही पानी आदिवासी लोग पीते हैं। आदिवासी महिलाएँ टौरियाँ पहाड़ियाँ चढ़ते–उतरते दूर–दूर से मिट्टी के घड़ों में पानी लाती हैं। पहाड़ियों और टौरियों के मध्य एक भौंरा तालाब है जिससे आदिवासी महिलाएँ पानी लाते भारी कष्ट सहती हैं। परेशान होकर वे कह उठतीं है,

"भौंरा तेरा पानी गजब कर जाय। गगरी न फूटे, खसम मर जाय।"

पाठा क्षेत्र के लोग जंगली जलाऊ लकड़ी बेचकर उदरपोषण करते हैं। कहा जाता है,

"यह पाठा के कोल, जिनका प्यास भरा इतिहास है, इनका भूख भरा भूगोल है।"

बान्दा जिले की यमुना, केन, चन्द्रावल, बाघेन, पयश्विनी, चान, बरदाहा एवम् गरारा आदि नदियों की कछारी दलदली भूमि में वर्षा ऋतु में धान की खेती की जाती है। जिले में जो तालाब हैं, वह खुदेलुआ एवम् छोटे निस्तारी हैं जिनसे कृषि के लिये कम पानी लिया जाता है।

किसी समय पर शहर के किनारे पर बने हुए ये तालाब शहर के बीच में आ चुके हैं और अतिक्रमण के शिकार हो चुके हैं। जमीन के किनारे, तालाब के किनारे की जमीन पर अतिक्रमण हो चुका है, अब तालाब मरने के कगार पर है। पहले गांव के लोग स्वयम् कार्य कर तालाबों को साफ कर लेते थे और उनके पानी के आने के स्रोतों को साफ कर देते थे ताकि बरसात के समय काफी पानी आ सके, लेकिन अब सरकारी फन्ड मिलने के कारण कोई भी काम करने के लिए तैयार नहीं है। स्वयम् सत्ता पर काबिज व विराजित लोग– चाहे प्रधान हो या बी डी ओ हो या अन्य, सरकारी फन्ड को तितर बितर कर निस्तारित कर लेते हैं और जंगल व तालाबों पर काबिज है और इस तरह से तालाब धीरे–धीरे मर रहे है। उन पर मकान और घर बनते चले जा रहे है। अतिक्रमण होने के कारण यह तालाब मृत अवस्था में है। और सिंचाई मेड़ और पेड़ व्यवस्था ही खत्म हो रही है। पानी पीने की समस्या और थोड़ा बहुत खेत की सिंचाई आगे आगे खत्म हो रही है अगर किसी कारणवश सरकारी व्यवस्था खराब हो गई तो गांव और शहर दोनों ही प्यासे मरने के कगार पर आ जाएंगे। प्राकृतिक सहज उपलब्ध स्त्रोत खत्म हो रहें है।

बान्दा के लगभग एक के बाद एक तालाब मिटाए जा रहे है या फिर दबंग – दादुओ के कब्जे का दन्श झेल रहे है, तालाबो को पुनः एक बार संजीदगी से बचाने को लेकर उत्तर प्रदेश सरकार ने रुख किया है, लेकिन क्या वे

इसमे सफल हो पायेगे? वो भी जब सुप्रीम कोर्ट के आदेश भी महज सरकारी रूलिंग बनकर रह गए हो। बान्दा के आज करीब 4540 तालाबो की आबरू डार्क जोन में है जबकि बुन्देलखण्ड के 20,000 तालाबो की भ्रूण हत्या आला अधिकारियो के नाक के नीचे की जा रही है। मगर क्या नेता और क्या सामाजिक मुहिम, का अवसरी हल्ला भी इनको नही बचा पाया है। 2

कुआ, बावड़ी, तालाब यह वह जल स्रोत थे जिन्हें पुराने लोगों ने अपनी जमीन में खुदवाए और पानी सबसे अच्छा दान है, समझ कर गांव के लिए छोड़ दिया। लेकिन वर्तमान में गांव के लोग या शहर के लोग केवल सरकार के ऊपर निर्भर हो गए हैं कि वही इसकी सफाई करें, गंदगी शहर वाले, मोहल्ले वाले, गांव वाले, डाल दें लेकिन सफाई करे सरकार। कारण और भी होता है। सरकार सारे तालाबों को बावरी की सफाई के लिए पैसा रिलीज करती है, जब तक पैसा रिलीज होता है तो गर्मी आ जाती हैं इसके पीछे भी एक कारण दिया जाता है कि गर्मी में जमीन सूखी हुई है तो खोदना आसान है। एक या दो, दिखाने के लिए, फोटो खिंचवाने के लिए सफाई की जाती है। थोड़ा सा रुके तभी वर्षा हो गई और सारे काम संपूर्ण दिखाकर पूरा पैसा, प्रावधान और सरकारी संस्थान के लोग डकार जाते हैं। दूसरा– तरह–तरह की योजनाएं चला कर गांव को, शहर को, पानी की सप्लाई कर, लोगों को आराम तलब बना दिया है। आराम तलब होने के कारण, ना तो अपने आप कोई सफाई करता है, ना पानी लेता है, कूड़ा और ऊपर से डाल देते हैं। सफाई कर्मचारी भी आंख बची नहीं कि कूड़ा कुएं में, कौन उठाएं। वह समय दूर नहीं जब किसी भी शहर में किसी भी कारण से बिजली या प्राकृतिक आपदा के कारण, अगर बिजली 10–15 दिन के लिए कट जाए तो पीने के पानी की तो बात छोड़ो सूंघने के लिए पानी नहीं मिलेगा और तब हमें इस विकास की कीमत चुकानी होगी। पहले तालाब और कुए से ग्रामीण लोग अपने खेतों की सिंचाई ठेकली रहट या दूसरे तरीके से कुछ कर लेते थे। विकास के वर्तमान समय में सोलर से पम्प से कर सकते है। इसी आधार पर सरकार ने हर खेत में एक तालाब खुदवाने की योजना चलाई। किसी भी तालाब की एक फोटो ली, जमा की, कार्यों पर तालाब को गया पैसा, किस ठेकेदार और अधिकारियों के बीच में बंट गया, पता नहीं। खेत से चैक तक, और हालात जमीन के नीचे पानी नहीं, बादलों में पानी नहीं, तो खेत तो सूखेंगे ही।

बान्दा शहर के तालाब

1	तालाब	कच्चा तालाब
2	तालाब	कजलिया तालाब, निम्नी पार
3	तालाब	कन्धरदास तालाब
4	तालाब	कलामत ताला
5	तालाब	केवटन तालाब, केवटरा
6	तालाब	गौरी बाबू का तालाब
7	तालाब	नवाब तालाब
8	तालाब	परशुराम तालाब, गायत्री नगर
9	तालाब	प्राची तालाब
10	तालाब	प्रागी तालाब
11	तालाब	बडा तालाब, तिदवारी रोड
12	तालाब	बाबा तालाब इन्दिरानगर के उत्तरी छार पर
13	तालाब	साहब तालाब, जरैली कोठी, कर्बला रोड
14	तालाब	सेढ़ू तलैया
15	तालाब	शिर्डी तलैया,ग्गगगगग
16	तालाब	हरदौल तलैया
17	तालाब	भरभूजन का तालाब, मढिया नाका
18	तालाब	राजा का तालाब, खिन्नी नाका, गुमान सिन्ह ने मरम्मत कराया।
19	तालाब	छाबी तालाब
20	तालाब	लोहार तलैया, मर्दन नाका
21	संदर्भ	**bnda hist kua talab name jalvayu water data destuction**

तालाब व कोठी

भौमिकीय संरचना, तालाब, नहर, नाला **Geological Structure & Ponds, Canal, Nala(Water Channel)**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

प्रमुख बडे तालाब निम्नांकित हैं–

1. नवाब टैंक बान्दा(छूंइ ज्ंदाए ठंदक)– नवाब जुल्फिकार अली ने यह तालाब बनवाया था जो नगर का जन निस्तारी तालाब है।

कहा जाता है जुल्फिकार अली बहादुर के समय में एक वर्ष तक इस इलाके में वर्षा न हुई। अन्न पैदा न होने के कारण और कमी के कारण भयानक भुखमरी पैदा हुई। नवाब ने शहर की जनता की देखभाल के लिए शहर की आबादी के पास एक बड़ा तालाब बनवाने का काम शुरू किया, जहां दिन रात काम हुआ करता था। रात में इसलिए कि शहर के नामी ग्रामी स्त्री पुरुष, जो लज्जा के कारण दिन में काम नहीं करना चाहते थे, रात में अपनी इज्जत बचाने के लिए काम किया करते थे। इस काम को ज्यादा दिनों तक चलते रहने के लिए, उसको इतना गहरा खुदवाया कि प्राकृतिक स्रोतों से पानी निकल आया। इसके चारों ओर पुख्ता बनवाया गया। पुरुष और स्त्रियों के घाट बनवाए गए।

पश्चिमी भाग पर एक शानदार कोठी भी बनाई गई जिसमें स्त्रियों के लिए विशेष घाट बनवाया गया। यहां बनी हरम में बेगमें वगैरा नहाया करती थी। यह नवाबों का एशगाह भी था, जहां पर युद्ध में जीती गई व सुन्दर (सुन्दरता के कारण अभिशापित, अभागी)लड़कियों को लाया जाता था।

एक अष्ट कोणिय गुंबद बनवाया गया था। कहते हैं कि इसमें पानी के नीचे पांच मंजिले रहती हैं। तालाब भर जाने पर चार मंजिली हमेशा पानी में डूबी रहती हैं।

उस समय लड़ाका पुरवा पर नवाब साहब का कब्जा था। 1857 ई0 में अंग्रेजों ने लड़ाका पुरवा व तालाब जब्त कर नीलाम कर दिया, जिसे शेख युसूफ जमा ने खरीदा। अंग्रेज सरकार ने जिला बान्दा में सिंचाई विभाग खोला। मिस्टर बारलो, चीफ इंजीनियर ने केन नदी पर बरियारपुर नामक स्थान पर बांध बना कर एक नहर निकली। उसकी एक शाखा बान्दा तक लाई गई।

ब्रिटिश शासन काल में बनाई गई नहर, जो 30 किलोमीटर लंबी है, सालों से बर्बाद पड़ी हुई है। पैलानी तहसील के अलावा अलोना गांव से निवाई पिपरी समेत एक दर्जन गांवों को सिंचाई के लिए बनाई गई यह नहर पिछले 60 साल से बर्बाद पड़ी हुई है। (वर्तमान 2025)यह 30 किलोमीटर लंबी नहर बुंदेलखंड के बांदा में जल संकट से निजात दिला सकती है, तभी जब शायद कोई इसका देखभाल करें और कार्य करने लायक बना सके। नई नहर तो बनने से रही। इसीलिए बांदा या बुंदेलखंड पिछड़ा?

इस तालाब को नवाब टैंक के नाम से भी जाना जाता है।

बाबू या बापू का तालाब

नवाब टैंक के बनाने के समय, लगभग चार फर्लांग की दूरी पर, पूर्व की दिशा में नवाब के खजांची, जो मराठा थे, ने भी एक तालाब बनवाया, जिसकी चहारदीवारी बना दी गई लेकिन उसका पुख्ता कच्चा रहा। इस तालाब के किनारे पर एक कोठी बनाई गई। यह तालाब बापू साहब के नाम से पुकारा गया लेकिन यह बाबू भी कहा जाता है। यह नवाब साहब के खजांची अर्थात बाबू के द्वारा बनवाया गया तालाब है। सरकारी पेय व्यवस्था के कारण तालाब अब जीर्ण शीर्ण अवस्था में है।

प्रागी तालाब

शहर के बाहर प्रागी तालाब बना है, जिसे बान्दा के एक रईस, प्रागी दास ने बनवाया था। यह पंडित मन्नू लाल अवस्थी, पंडित ईश्वर प्रसाद अवस्थी रईस, प्रागी दास के पूर्वज थे। आबादी से दूर एक मंदिर भी बनवाया। यह दोनों यादगार है और प्रागी तालाब के नाम से मशहूर है।

कंधार दास तालाब

एक अन्य तालाब कंधार दास तालाब भी है, जिसे एक ठेकेदार ने अन्य तालाबों के बनाते वक्त बनवा लिया था। इसे कंधार दास का तालाब कहा जाता है।

परशुराम तालाब

इन रईसों की देखा देखी परशुराम नाम के एक व्यक्ति ने भी एक कच्चा तालाब खुदवाया जिसके नाम से परशुराम तालाब मशहूर हुआ।

छावि तालाब

इस समय छावि तालाब का भी निर्माण हुआ

2. अलवारा तालाब, राजापुर(।सूंतं च्वदकए तंरंचनत)– चित्रकूट जनपद के ग्राम राजापुर में अलवारा जन निस्तारी तालाब है।

3. खार तालाब, सीमू – बवेरू परिक्षेत्र के सीमू ग्राम में खार तालाब है, जो खुदेलुआ है। एक बड़ी बँधिया–सा है, कम गहरा है। यह तालाब जाड़ों के अन्त तक सूख जाता है।

4. दुर्गा तालाब, तरौहा – दुर्गा तालाब कर्बी से 5 किलोमीटर की दूरी पर, तरौहा के निकट स्थित है। यह बड़ा तालाब है। जननिस्तारी तालाब होने के साथ ही इससे कृषि सिंचाई के लिये भी पानी लिया जाता है।

5. राजा तालाब, बान्दा – राजा तालाब बान्दा के बुन्देला राजा गुमान सिंह(भूरागढ़) ने बनवाया था। यह तालाब बस्ती के मध्य में था जिसके चारों ओर खिरकों के रूप में बस्ती थी। वर्तमान में बान्दा नगर का विकास होने से इसका अस्तित्व ही समाप्त हो गया है।

6. फुटना तालाब – बड़ा कोटरा– यह चन्देली तालाब है। जो मऊ तहसील के अन्तर्गत है। यह तालाब फूट चुका है। इसीलिए लोग इसे फुटना तालाब कहते हैं।

7. कोठी तालाब – कटोरा तालाब एवम् गणेश तालाब, कर्वी– यह तालाब विनायक राव मराठा ने बनवाया थे। तालाब सुन्दर एवम् जन निस्तारी है। गणेश तालाब पर गणेश मन्दिर है।

8. गौंड़ा का फूटा तालाब – यह तालाब नरैनी क्षेत्रान्तर्गत है जो चन्देल काल का है। यह दो पहाड़ों के मध्य छोटा बाँध बना कर बनाया गया है। यह सुन्दर बड़ा तालाब रहा, परन्तु जल भराव की अधिकता और देख–रेख की कमी के कारण फूट गया था जिससे इसे फूटा ताल कहा जाता है।

9. कालिन्जर के तालाब – जिला बान्दा तहसील नरैनी में कालिन्जर पहाड़ पर कालिन्जर किला है। किला की उत्तरी तलहटी में कालिन्जर बस्ती है। कालिन्जर किला भारत के प्रसिद्ध किलों में से एक है। कालिन्जर पहाड़ के ऊपर, किले के अन्दर के प्रांगण में पत्थर काट–काटकर अनेक सुन्दर तालाबों का निर्माण किया गया था। चन्देल नरेशों के बनवाये तालाबों में गंगा सागर, मझार ताल, राम कटोरा, कोटि तीर्थ तालाब, मृगधारा शनिकुंड, पांडु कुण्ड, बुढ़िया का ताल, भैरों बाबा की झिरिया(भैरों कुण्ड), मदार तालाब, ब्राम्हण तलैया(बिजली तालाब) प्रसिद्ध हैं। पहाड़ के नीचे बस्ती में बेला ताल एवम् गोपाल तालाब हैं।

10. लोखरी के तालाब – जिला बान्दा, तहसील मऊ के अन्तर्गत लोखरी ग्राम है। ग्राम की कालिका देवी पहाड़ी की तलहटी में चन्देलकालीन प्राचीन तालाब है। इसी के पास कोटा कन्डेला मन्दिर के पास भी एक छोटा तालाब है जो जन–निस्तारी है।

11. मड़फा के तालाब – नरैनी तहसील अन्तर्गत मड़फा पहाड़ पर कालिन्जर के समकाल का विशाल चन्देली किला है। किले के अन्दर मन्दिर से सन्लग्न पत्थर काट कर विशाल सुन्दर तालाब का निर्माण किया गया था, जिसमें सदैव जल भरा रहता है। इसी के पास एक छोटा तालाब भी है, जिसमें केवल वर्षा ऋतु में पानी रहता है।

12. रासिन के तालाब — नरैनी तहसील अन्तर्गत के रासिन कस्बा है, जो चन्देल काल में पहाड़ी पर था। चन्देल काल का एक तालाब पहाड़ पर पत्थर काट कर बनाया गया था। जो लम्बाकार है। एक दूसरा छोटा तालाब पहाड़ी के नीचे बलन बाबा मार्ग पर है।

13. लामा के तालाब — बान्दा से चिल्ला मार्ग पर 13 किमी. की दूरी पर लामा ग्राम है, जहां 5 तालाब हैं जो बोलवा, धोबिहा, गुमानी, मदाईन एवम् इमिलिहा हैं। यह सब निस्तारी तालाब हैं।

14. अछरोंड, अरहर एवम् मानिकपुरा ग्रामों में भी छोटे–छोटे एक–एक तालाब हैं।

इलाके	बाबा तालाब(बाबा तालाब)
ऊंचाई / ऊंचाई	125 मीटर समुद्र स्तर से ऊपर

झीलें और पहाड़ियाँ

जिले में कोई झील नहीं है। फिर भी कुछ बड़े गड्ढे हैं जो हमेशा पानी बनाए रखते हैं। यहाँ कई तालाब हैं, जिनमें से कुछ काफी बड़े हैं, जैसे कि बबेरू तहसील के खार में। इनमें से कई तालाब पानी के भंडारण के लिए खोदे गए हैं, जिनमें से कई का इस्तेमाल राहत कार्यों के लिए किया गया है।

जिले की पहाड़ियों में विन्ध्य पठार का वह हिस्सा शामिल है जो मऊ और कर्वी तहसीलों(जिसे अब चित्रकूट जिले के नाम से जाना जाता है) के सुदूर दक्षिणी भाग में स्थित है। विन्ध्य की उत्तरी सीमा जिसे विन्ध्याचल श्रेणी के नाम से जाना जाता है, मऊ तहसील के सुदूर पूर्व में यमुना के पास से शुरू होती है। यह यमुना से दक्षिण–पश्चिम दिशा में पीछे हटती है– व धीरे–धीरे ऊंचाई में बढ़ती जाती है, हालांकि औसत समुद्र तल से कहीं भी 450 मीटर से अधिक नहीं होती है। यह अनुसुइया की पवित्र पहाड़ियों के पास जिले को छोड़ देती है और नरैनी तहसील के दक्षिण–पूर्वी भाग में गोधरामपुर के रूप में फिर से प्रकट होती है। इस बिन्दु से पश्चिम की ओर कालिन्जर तक जिले की सीमा से पहाड़ियाँ हैं।

बान्दा की जल प्रबंधन

"बान्दा की जल प्रबंधन के सुधार के लिए कुछ नए विचार प्रस्तुत हुए हैं।(1901ई0)
एक योजना के तहत कहली नाले पर उत्तर की तरफ ईटों का एक बांध बनाया जाना है।"

इसके दो फायदे होने के अनुमान हैंः–

1. जेल के पास बरसाती नालों के द्वारा क्षरण को रोकना।
2. जमीन के नीचे का पानी, जो गहरे कटाव से रिसता है, को रोककर बांध में पानी का स्तर बढ़ाना।

उपरोक्त कार्यरत योजना सूखा राहत के तहत किया जाना है। 1901 ई में भयंकर सूखा पड़ा था।

इसी योजना के अन्तर्गत गौरी बाबू के तालाब की मरम्मत की गई और पानी निकासी के रास्ते को पक्का बनाया गया। अन्य योजना के अंतर्गत बड़े तालाबों को पाइपों के माध्यम से भरना है यानी पाइपों के द्वारा नहर से पानी आएगा जो शहर के पूर्व तक नहीं पहुंच पाती थी।

केन नदी व नाले

बांदा को एक हिस्से में 10 एमएलडी पीने के पानी की आवश्यकता है जबकि वर्तमान में नदी से केवल 5 एमएलडी पानी ही मिल पाता है। जरूरत को पूरा करने के लिए, झांसी से बांदा आने वाली केन के ऊपर जो रेलवे

ब्रिज बना हुआ है, उसके पास इंटेक वेल बना हुआ है वहां पर रेत से एक बांध बनाकर सारा पानी रोक लिया गया और बांदा को सप्लाई किया जा रहा है। नवंबर 2025 के समाचार के अनुसार यह उत्तर दिया गया है। इसका अर्थ यह है कि बांध के बाद केन में कोई भी पानी है ही नहीं। अब बांदा के द्वारा मल मूत्र, गंदगी, सेप्टिक टैंक से निकला यह पानी, 40 नालाओं के द्वारा केन नदी में वापस गिराया जाता है अर्थात केनवारा और उसके आगे अछरौन्ड, उजरहटा, मरौली और अन्य गांवों से होते हुए यमुना तक जो भी पानी जाता है, वह सब मल व नाले का पानी, जो बांदा से निकला है, डाल दिया गया है। केन के ऊपर बेतवा के लिए, केन बेतवा नहर बनाने के बाद, केन में बहने वाला पानी पूरी तरह से खत्म हो रहा है और लगता है कि अगले 2030–2035 तक केन पूरी तरह से जल रहित हो जाएगी। सोने में सुहागा रेत खनन के द्वारा नदी को और सुखा दिया गया है। रेत जो पानी को संग्रहित करके उसे गर्म मौसम में जब सूखा रहता है धीरे–धीरे छोड़ती थी और पानी नदी में बना रहता था। रेत के इतना गहरे खुदाई रहने के कारण, अब सब कुछ खत्म होने वाला है– ऐसी भविष्यवाणी लेखक की है।

बांदा के पंकज नाला और निम्नी नाला, दो मुख्य नाला है।

पंकज नाला

चमरौड़ी कालू कुआ, बंगाली पुरा, डीएम कॉलोनी, स्वराज कॉलोनी, जेल रोड शम्भूनगर होते हुए करीब 7 किलोमीटर लंबा रास्ता तय कर के गंदा पानी सीधे केन में गिरता है।

पंकज नाला

5 फुट चौड़ा और 10 फुट गहरा ही रह गया है। बाकी जगह अधिकारियों के निगाहेकरम से अतिक्रमण में तब्दील हो गया है।

निम्नी नाला

निम्नी नाला भी गुलाब बाग, मढ़ियानाका, खुटला, निम्नीपार, नोनिया मुहाल होते हुए 10 किलोमीटर लंबी दूरी तय कर के केन की तरफ बढ़ता है।

निम्नी नाला बलखंडी नाका पुलिस चौकी के बगल से निकलता है जो अतिक्रमण का शिकार है। यहां नाला कम, लोगों के मकान ज्यादा नजर आते हैं। वर्षा में तूफानी व उफनाए हुए नाला को जाने की जगह नहीं है अतः उससे निकली गंदगी आसपास की बस्तियों की गलियों में भर जाता है और जल भराव हो जाता है।

संदर्भ ग इदकं ीपेज दंसं चंदांर दंसं ील चंदांर

छोटे नालों का भी यही हाल है।

बांदा हिस्ट्री पानी नदी नाले

नगर पालिका नगर पालिका बांदा शहरी क्षेत्र का सीवेज काम ही नहीं करता और बिना जैविक शोधन के सीधा केन नदी में गिरता है और इसी रिपोर्ट पर प्रदूषण विभाग में एनजीटी को रिपोर्ट भेजी जिस पर एक्शन कार्यवाही करते हुए दो 2.60 करोड रुपए का जुर्माना भी नगर पालिका पर लगा और निश्चित रूप से इसको जो ग्राहक हैं उनसे ही वसूला जाएगा ना कि ऑफिसर से। ज्ञात सूत्रों से पता चला है कि शहरी क्षेत्र में 4646 बड़े नाले हैं, 104 मंझौले नाले हैं और 68 छोटे नाले हैं जो कुछ बहुत छोटे और कुछ मझौली लंबाई के हैं। सभी नाले पंकज नाले में और निम्नी नाला में जाकर गिरते हैं। पंकज नाला शहरी क्षेत्र से निकलकर करिया नाला में जाकर मिलता था जो कि हनुमान मंदिर के पास से होते हुए केन नदी में गिरता है। वहीं निम्नी नाला राजघाट के पास के नदी में गिरता है। हनुमान मंदिर के पास करिया नाला नदी में गिरने वाले का जैविक शोधन नहीं होता। मढ़िया नाका में चार बड़े नाले हैं लेकिन नगर पालिका की सूची में एक भी नहीं। नाला व नालियों की सफाई के लिए गैंग लगाने के साथ रोजाना मॉनिटरिंग के लिए नोडल ऑफिसर नामित किए जाते हैं लेकिन रिपोर्ट में काफी कुछ जानकारी छुपा दिए जाते हैं।

मदान नाला

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

बांदा हिस्ट्री नल 46 नाला नाम

भौमिकीय संरचना, तालाब, नहर, नाला **Geological Structure & Ponds, Canal, Nala(Water Channel)**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

सन्दर्भ/सौजन्य/ साभार

ब्वनतजमेलरू डॉ. काशीप्रसाद त्रिपाठी ठन्छक्म्स्ङ्ग्भ्।छक
ठनदकमसींदक ॅपजलं च्तपींक
ठनदकमसींदक त्मेमंतबी च्वतजंस
बान्दा जिले के तालाब(च्वदके व ठंदक)
भ्पेजवतल व ठनदकमसींदक च्वदके ।दक ॅजमत डंदंहमउमदज
ठदकं ैपेज `ववीं `ूमजचंजतं
कंजं बंद इम जांमद तिवद ।नह 25 छमू तमूंतक व क्ड ंदक वजीमत तमूंतक